14. युग और मैं

स्वाध्याय

प्रस्तुत कविता (युग और मैं) कविता के रचनाकार का नाम बताइए |

- 'युग और मैं' कविता के रचनाकार नरेन्द्र शर्मा है |

गगन और धरती से क्या हो रहा है ?

- गगन से आग के गोले बरस रहे है और धरती से ज्वालाए उठ रही है |

सात समंदर में क्या हो रहा है ?

- सात समंदर में हिंसा की आग से पानी खौल रहा है |

'युग और मैं' काव्य के शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए |

- इस काव्य का समानार्थी शीर्षक 'कविता और जमाना |

बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए है ?

- बुद्धि का कार्य संसार के अज्ञान को दूर करके यहा छाई जड़ता मिटाना है | हाथों का काम बुद्धि के मार्गदर्शन में पृथ्वी को स्वर्ग की तरह सुंदर बनाना है |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है ?

- ज्ञान अपनी गहराई खो रहा है | पृथ्वी दु:ख के समुद्र में डूब रही है |

कवि के ह्रदय में कैसी व्यथा है ?

- कवि संसार में हो रहे संहार के दृष्यों को देखकर बहुत दुखी है | उसे लगता है की ऐसी स्थिति में उसकी चिंता करनेवाला कोई नही है है | कवि अपनी पीड़ा के घूंट पी लेने में ही अपनी भलाई समझता है | सारी दुनिया को दु:ख में डूबी देखकर वह भी गम के समुद्र में डूब जाना बेहतर मानता है | उसे लगता है की ऐसी स्थिति में उसका कोई भी निशाना सही बैठनेवाला नही है | इस प्रकार कवि के ह्रदय में घोर दु:ख और निराशा है |

'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए |

- इस कविता में कवि ने संसार की स्थिति के संदर्भ में अपनी स्थिति देखी है | कवि कहते है की प्राय: मनुष्य अपनी मामूली पीड़ा को भी बड़ी मानने लगता है | उसे लगता है की उसके अस्तित्व का कोई महत्व नही है | प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि यह कहना चाहते है की दुनिया की स्थिति देखकर मनुष्य को कभी हताश और निराश होनी की जरूरत नही है | उसे आत्मविश्वासपूर्वक पूर्ण जीने का प्रयत्न करना चाहिए |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निम्नलिखित काव्य-पंक्तिका आशय स्पष्ट कीजिए |

मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,

काम अधूरा छोड, कर रहा आत्मधात मानव ज्ञानी |

सब झूठ हो गए, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या !

- इस पंक्ति में कवि कहते है की मनुष्य किस तरह अपनी प्रगति की रहा से भटककर गुमराह हो गया है |मनुष्य ने विज्ञान के क्षेत्र में अनोखी सिद्धिया प्राप्त कर ली है | इन सिद्धिया के बल पर वह स्वय को ईश्वर समजने लगा | ऐसी सिद्धियोंवाले देश सारी दुनिया पर अपना अधिकार करने के फेर में पड़ गए | उन्होने ईश्वर बनने की राह छोड दी और अपना ही विनाश करने लगे | कवि कहता है की जब सबने अपनी राह छोड़ दी तो में अगर भटक गया तो इसमें मेरा क्या दोष ?

जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?

जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सबकी समता के?

सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!

- प्रस्तुत पंक्तियाँ नरेन्द्र शर्मा, की 'युग और मैं' कविता से 3 ली गई हैं। इनमें कवि ने दुनिया के भविष्य के प्रति निराशा प्रकट की है।
- कवि कहते हैं कि वर्तमान में संसार संहार की वृत्तियों में उलझा 6 है। चारों ओर विध्वंस की स्थिति है। एक-दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित
- करने की होड़ है। ऐसी दशा में मनुष्य की बराबरी (समता) की बातें केवल बातें ही रह जाएँगी। जबतक संसार में शांति और भाईचारे की भावना नहीं होगी तब तक मनुष्यता का वातावरण नहीं बनेगा। बिना उसके मानव-मानव की समानता का आदर्श कभी व्यवहार में नहीं आ सकेगा। कवि कहता है कि जब सारी दुनिया गैरबराबरी की पीड़ा से परेशान है तो मैं अपनी पीड़ा की क्यों चिंता करूँ?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विरोधी शब्द लिखिए :

1 हस्ती x नास्ति

2 अंगार x ओल

3 समुंदर x दानवता

ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं?

जब मौत सभी को निगल रही हो?

चारों ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो,

हत्याएं हो रही हों

- इन तीनों परिस्थितियों में सबसे पहले मैं 108 नंबर डायल
- करके पुलिस को जानकारी दे दूंगा। इसके अतिरिक्त -
- जब मौत सभी को निगल रही हो -
- जब मौत सभी को निगल रही हो और वह मेरे बस की बात होगी तो मैं सबकी सहायता करूँगा। अगर वह मेरे बस की बात नहीं है तो भी मैं भीतर से स्थिर रहकर मेरे हिस्से में मेरा जो भी कर्म होगा, मैं करता रहूँगा। मैं तनिक भी विचलित नहीं हो पाऊँगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in